तेल से ज़्यादा भोजन बरबाद करता है अमेरिका

हाल में एक अनुमान लगाया गया है जिसका निष्कर्ष यह निकलता है कि यू.एस. अपनी तट रेखा से जितना तेल व गैस निकालता है, उससे कहीं ज़्यादा खाद्यान्न की बरबादी करता है।

ऑस्टिन के टेक्सास विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर इंटरनेशनल एनर्जी एण्ड एनवायर्मेंटल पॉलिसी के माकेल वेबर और अमांडा कुएलर के मुताबिक यू.एस. में कुल ऊर्जा खपत में से 16 प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादन में खर्च होती है। एक अनुमान के मुताबिक यू.एस. में हर साल 25 प्रतिशत खाद्यान्न बरबाद होता है। इन आंकड़ों के आधार पर वेबर और कुएलर ने गणना की है कि यह मात्रा प्रति वर्ष 21,500 खरब किलोजूल के बराबर है। बरबादी के मामले में डेयरी पदार्थ और सब्ज़ियां सबसे ज़्यादा दोषी हैं। इनमें क्रमशः 4660 और 4030 खरब किलोजूल प्रति वर्ष की बरबादी होती है।

अध्ययनकर्ताओं का यह भी अनुमान है कि ऊर्जा कार्यक्षमता बढ़ाने की कई लोकप्रिय रणनीतियों की अपेक्षा यदि यू.एस. में खाद्यान्न की बरबादी रोकी जा सके तो कहीं अधिक लाभ हो सकता है। दरअसल, यू.एस. आने वाले सालों में इथेनॉल रूपी जैव ईंधन में जितनी ऊर्जा का उत्पादन करेगा, यह बरबादी उससे ज़्यादा है। और तो और, टीम का कहना है कि उपरोक्त अनुमान वास्तविकता से थोड़े कम ही होंगे क्योंकि ये यू.एस. कृषि विभाग के 1995 के खाद्यान्न बरबादी के आंकड़ों पर आधारित हैं। तब से खाद्यान्न की कीमतें घटी हैं और तदनुसार बरबादी बढ़ी ही होगी।

अध्ययन दल का मत है कि इस आंकड़े में खेतों पर होने वाली बरबादी और मछली पालन में होने वाली बरबादी के आंकड़े शामिल नहीं हैं। अनुमानों के मुताबिक दुनिया भर में जितनी मछली पकड़ी जाती है उसमें से 8 से 23 प्रतिशत तक बाय-कैच (गौण उत्पाद) के रूप में होती है जिसे प्रायः वापिस समुद्र में फेंक दिया जाता है और ये मछलियां मृत अथवा मृतप्राय हालत में होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***